Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET

पेपर – 2

NATIONAL TESTING AGENCY (NTA)

पेपर – 2 || भाग – 3

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं भारत की विदेश नीति

SIERRA INNOVATIONS

	Unit -5 अन्तराष्ट्रीय संबंध (राजनीति) एवं विभिन्न उपागम	
1.	अन्तराष्ट्रीय संबंध (राजनीति) एवं विभिन्न उपागम	1
2.	राष्ट्रीय शक्ति	39
3.	शीत युद्ध	52
4.	UNO	77
5.	वैश्विकरण	96
6.	WTO	103
7.	नई अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था	107
8.	अफ्रीका के संगठन	112
9.	आसियान	115
10.	सार्क	123
11.	धर्म–संस्कृति तथा पहचान राजनीति की भूमिका	130
12.	गरीबी तथा विकास	138
13.	मानवाधिकार, प्रवासन तथा शरणार्थी	148
14.	जलवायु परिवर्तन तथा पर्यावरणीय चिन्ताएँ	157
15.	अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद	175
	Unit -6 भारत के अन्य देशों से संबंध	
1.	भारत – चीन संबंध	180
2.	भारत – श्रीलंका संबंध	187
3.	भारत – बांग्लादेश संबंध	192
4.	भारत – नेपाल संबंध	197
5.	भारत – भूटान संबंध	201
6.	भारत – पाकिस्तान संबंध	203

7.	भारत – अमेरीका संबंध	208
8.	गुट निरपेक्ष	236

Toppersnotes
Unleash the topper in you

* अन्तराष्ट्रीय राजनीति *

(1) अन्तराष्ट्रीय राजनीति →
इसमे राष्ट्रो के मध्य राजनीति के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक दोनो पक्षो का अध्ययन किया जाता है।

सैद्धान्तिक पक्ष मे आदर्शवादी सिद्धान्त, यथार्थ सिद्धान्त, व्यवस्था सिद्धान्त, खेल सिद्धान्त आदि को सम्मिलित करते है। जबकि
व्यवहारिक पक्ष मे एक राष्ट्र के विभिन्न अन्तराष्ट्रीय संगठनो का और इतरे राष्ट्रो के साथ सम्बन्धो का अध्ययन किया जाता है।
जैसे—
- भारत का UNO के साथ सम्बन्ध
- भारत का सार्क, आसियान के साथ सम्बन्ध तथा
- भारत का विभिन्न देशो के साथ सम्बन्ध

(2) अन्तराष्ट्रीय सम्बन्ध → इसमें दोनो राष्ट्रो के मध्य राजनीति के केवल व्यवहारिक पक्ष अध्ययन किया है। Ex:- भारत का UNO, सार्क, आसियान के साथ सम्बन्ध

(3) अन्तराष्ट्रीय मामले :-
राष्ट्रो के मध्य आर्थिक व तकनीकी सम्बन्धो का विशेष रूप से अध्ययनो किया जाता है
इसमे अन्तराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओ (IMF, W.B.) और अन्तराष्ट्रीय आर्थिक संगठन [EU, ASEAN] का विशेष रूप से अध्ययन किया जाता है।

वर्तमान वैश्वीकरण के युग मे इसका प्रभाव निरन्तर बढ़ रहा है

(4) विश्व राजनीति →
इसमें महाशक्तियों की संख्या और उनकी भूमिका का अध्ययन किया जाता है। अर्थात इसमें इस बात का अध्ययन किया जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक ध्रुवीय, द्वि ध्रुवीय या बहुध्रुवीय है। इसका अध्ययन निम्न विद्वान करते हैं। :—

→ फरीद जकारिया — Book, Post American world
बान्चा — BRIC (2010) में
ई. रोडन — IBSA (2006)

⇒ फरीद जकारिया
यह अपनी पुस्तक "Post American world" में लिखते हैं कि आज अमेरिका का पतन हो रहा है क्योंकि अमेरिका की युवा व्यवस्था पर पीढ़ी नशाखोरी का शिकार हो रही है तथा अमेरिका की अर्थव्यवस्था पर बाहरी लोगों का प्रभाव पड़ रहा है।
जबकि भारत, चीन जैसे राष्ट्र प्रगति पर महाशक्तियाँ बनने की ओर बढ़ रहे हैं।

इसी सन्दर्भ में - जकारिया का प्रसिद्ध कथन है :— "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक ध्रुवीय से बहुध्रुवीय होती जा रही है।

→ बान्चा →
इनका कहना है कि आज अमेरिका का तो पतन हो रहा है, जबकि आज BRIC (2010) (ब्राजील रूस, भारत, चीन) महाशक्तियों की ओर बढ़ रहे हैं, इसलिए विश्व राजनीति एक ध्रुवीय ~~की~~ से बहुध्रुवीय की ओर बढ़ रही है।

(3)
ई. रेडन —

इनके अनुसार आज अमेरिका का तो पतन हो रहा है जबकि (EBSA) राष्ट्र महाशक्तियों के रूप में उभर रहे हैं। इसलिए विश्व एक ध्रुवीय से बहुध्रुवीय होती जा रही है
2006

* अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त *

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति
↓
उद्देश्य- राष्ट्रीय हितों की पूर्ति
|
विवाद

(1) आदर्शवादी सिद्धान्त
सतही सामान्य
— वार्ता- सहयोग द्वारा हल

(2) यथार्थवादी सिद्धान्त
कठोर
शक्ति / शक्ति संघर्ष

⇒ अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सभी राष्ट्र राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए भाग लेते हैं इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में विवाद होते हैं।

बर्ट्रेंड ज्यूनेल का कथन है—
"विवाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का मूल तत्व है।"

विवाद की प्रकृति को लेकर विद्वानों में 2 मत हैं—

⇒ प्रथममत → इस मत के अनुसार विवाद सतही / सामान्य प्रकृति के होते जिन्हे वार्ता या सहयोग द्वारा हल किया जा सकता है।

इस मत के समर्थक आदर्शवादी सिद्धान्त प्रस्तुत करते है।

⇒ द्वितीयमत → इस मत के अनुसार विवाद कठोर प्रकृति के होते हैं जिन्हे शक्ति / शक्ति संघर्ष द्वारा हल किया जा सकता है।

→ इस मत के समर्थक यथार्थवादी सिद्धान्त प्रस्तुत करते हैं।

* आदर्शवादी सिद्धान्त *

आदर्शवादी सिद्धान्त के अनुसार अन्तराष्ट्रीय राजनीति में विवाद सतही सामान्य प्रकृति के होते है। जिन्हे वार्ता सहयोग द्वारा हल किया जा सकता है।

आदर्शवादी सिद्धान्त की मूल मान्यताएँ →

1. अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे सहयोग व नीति कला पर बल
2. ,, संगठन के उन्मूलन का समर्थन
3. युद्ध के उन्मूलन का समर्थन
4. राष्ट्रो के मध्य अन्तर्निर्भरता पर बल
5. विश्व सरकार का समर्थन

इस सिद्धान्त के समर्थक →

वुडरो विल्सन, ग्रीन, डेविड हेल्ड, लुई.सी बोन क्लार्कसेन, एचसेन, आर्थर मुर्रे, अरविन्द घोष आदि।

→ व्यवहारवादी क्रान्ति के फलस्वरूप आदर्शवादी के सिद्धान्त की निम्न- २ शाखा का उद्भव हुआ।

(1) शान्ति अनुसंधान दृष्टिकोण →
यह राष्ट्रों के मध्य सहयोग संबंधी तथ्यों पर बल देती है।
इसके समर्थक - कोण्डर सेत।

(२) विश्वव्यवस्था दृष्टिकोण →
यह राष्ट्रों के सहयोग संबंधी लक्ष्यों के साथ-साथ उनके क्रियान्वयन पर भी बल देता है इसके समर्थक हैं:-
फाग मेग्नलोविच

आदर्शवादी सिद्धान्त की आलोचना इस कारण से भी जाती है यह शक्ति संघर्ष की अवहेलना करता है परन्तु इसका महत्व है यह ऐसे अ०रा० में सहयोग को बढ़ावा देता है।

NOTE -
राष्ट्रों के मध्य जो वार्ता/सामिति होती है वह सहयोग संबंधी लक्ष्यों के संकलन का कार्य करती है।

अतः वार्ता सामिति शक्ति अनुसंधनात्म दृष्टिकोण की प्रासंगिकता को स्पष्ट करती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

यथार्थवादी सिद्धान्त

राष्ट्रो के मध्य जो विवाद होते है वह कठोर प्रकृति के होते है उन्हे शक्ति/शान्ति संघर्ष द्वारा ही हल किया जाता है।

यथार्थवादी सिद्धान्त का विकास क्रम –

(1) प्रारम्भिक यथार्थवाद
(2) परम्परागत " → मारग्रेन्थाऊ – (संघर्ष)
(3) नव " → (सहयोग-संघर्ष)
(4) व्दिधारीय " स्टीफनकुक
(5) अधिकतम-न्यूनतम " रार्बट ड्रूकर
(6) राजनीति — " थामस श्री शेलिंग
(7) स्टालिपन "
(8) साम्यवादी "

(1) प्रारम्भिक यथार्थवाद–

यह यथार्थवाद को प्रस्तुत तो नही करते है परन्तु यथार्थवाद के बारे में एक-दो विचार अवश्य प्रकट करते है

समर्थक ⇒

(1) थ्यूसिडाइटिस →

इन्होने युध्द का अध्ययन किया था। इनका कहना था कि युध्द जितना लम्बा चलेगा उतना ही परिस्थितियो पर निर्भर करेगा।

(2) काल विट्ज →

इन्होने ने भी युध्द का अध्ययन किया। इनका कहना था कि "फ्रांसी क्रांति ने युध्द को व्यवसाय बना दिया है।"

BOOK – ON WAR – है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

एरिक फ्राम →
" प्रत्येक राष्ट्र शक्ति का संचय, विस्तार और प्रदर्शन करता है।"
Ques

राइनोल्ड नेबुर →
इनका कहना है कि आदर्शवादी सिद्धान्त प्रकाश की सन्तान है जबकि यथार्थवादी सिद्धान्त अन्धकार की सन्तान है।

यह लिखते हैं कि अन्धकार का रास्ता ही अच्छा है।

E.H. ई. एच. कार → यह "शक्ति सन्तुलन सिद्धान्त का अध्ययन करते हैं।
" शक्ति सन्तुलन को "शक्ति के समान वितरण के रूप में" परिभाषित करता है।

हेनरी पेसेन्जर →
इनका भी कहना था कि अमेरिका को शक्ति पर आधारित राजनीति अपनाना चाहिए।
→ यह शटल डिप्लोमेसी (टरकी) की अवधारणा देते हैं जिसमें कहते हैं कि बार-बार यात्राएं करने से संबंध सामान्य हो जाते हैं।
→ इन्होंने अरब-इजरायल के सन्दर्भ में कूटनीति का प्रयोग किया था।

यूवाज बर्गनर →
"राष्ट्रो को शक्ति पर आधारित राजनीति पर बल देना चाहिए।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(2) परम्परागत यथार्थवाद - (मारग्रेन्थाऊ का यथार्थवाद)

मारग्रेन्थाऊ यथार्थवाद सिद्धान्त को सैद्धान्तिक रूप प्रदान करता है। इसलिए इसे यथार्थवाद का जनक कहा जाता है।

इनका जीवन काल - 1904 - 1980

BOOK.

(1) साइंटिफिक मैन एंड पॉवर पालिटिक्स (1946)
(2) Politics Among Nantion (1948)
(3) इन डिफेन्स ऑफ नेशनल इंटरेस्ट (1951)
(4) द परपज ऑफ अमेरिकन पालिसी (1960)
(5) द ट्रूथ एण्ड पॉवर (1970)

मारग्रेन्थाऊ अपनी पुस्तक " Politics Among Nantion (1948) मे यथार्थवादी सिद्धान्त प्रस्तुत करता है।

जिसमे कहता है कि " अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की मूल कुंजी राष्ट्रीय हित है।"
(शक्ति)

लेकिन राष्ट्रीय हित को "शक्ति" कहकर पुकारता है। क्योंकि राष्ट्रीय हित की प्राप्ति शक्ति के माध्यम से होती है।

मारग्रेन्थाऊ के अनुसार शक्ति का तात्पर्य है →
"दूसरे के कार्यो को अपने अनुसार परिवर्तन करने की क्षमता ।"

मारग्रेन्थाऊ ने "शक्ति को साध्य और साधन दोनो माना" है।

✓ शक्ति को साध्य इसलिए है कि जब यह उच्चतम स्तर पर होती है तो प्रयोग की आवश्यकता नही पडती ।

✓ जबकि साधन इसलिए है कि क्योकि इसका व्यवहारिक प्रयोग करना पडता है।

⇒ मारग्रेन्थाऊ ने अपने यथार्थवादी सिद्धान्त को निम्न 6 नियमों के रूप से प्रस्तुत करता है –

– राजनीति पर प्रभाव डालने वाले सभी नियमों की जड़ मानव प्रकृति में निहित होती है –

इनके अनुसार मानव मूलतः अवगुणी प्राणी है इसके दो (2) मूल तत्व

(a) स्वार्थपरता

(b) प्रभुत्वलालसा (lust of Power)

मारग्रेन्थाऊ के अनुसार स्वार्थपरता का क्षेत्र तो सीमित रहता है परन्तु प्रभुत्वलालसा का क्षेत्र असीमित रहता है।

इसी प्रभुत्वलालसा के कारण मनुष्य अधिक से अधिक शक्ति का संचय करते हैं, चूंकि शक्ति के संसाधन सीमित होते हैं, अतः शक्ति के लिए संघर्ष करता है।

राज्य भी व्यक्तियों से मिलकर बनता है इसलिए राज्य में भी स्वार्थपरता और प्रभुत्वलालसा का अवगुण पाया जाता है।

राज्य प्रभुत्व के लिए शक्ति, संचय और संघर्ष करता है।

most Imp. → इसी आधार पर मारग्रेन्थाऊ कहता है कि "चाहे घरेलू राजनीति हो या अन्तराष्ट्रीय राजनीति सब शक्ति के लिए संघर्ष है।

नियम - २ - राष्ट्र हित की प्रधानता →

मारगेन्थाऊ के अनुसार अं'रा' में सभी राष्ट्र राष्ट्रीय हितो की पूर्ति के लिए भाग लेते है। इसलिए अं'रा' में राष्ट्रीय हित की प्रधानता पाई जाती है।

नियम - ३ - राष्ट्र हित का कोई निश्चित अर्थ नही →

मारगेन्थाऊ के अनुसार हित २ प्रकार के होते है।

(अ) स्थिर हित
→ इन्हे "मार्मिक" या "लघु सूची" भी कहते है।
→ यह भौगोलिक सुरक्षा, एकता अखण्डता से सम्बंधित होते है
→ यह परिवर्तित नही होते।

(ब) अस्थिर हित
→ इन्हे "अमार्मिक या दीर्घ सूची" भी कहते है।
→ यह सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक हित होते है।
→ इन्हे परिवर्तित किया जा सकता है। इसलिए मारगेन्थाऊ कहता है कि राष्ट्र हित का कोई निश्चित अर्थ नही होता है।

NOTE मारगेन्थाऊ अन्य तीन प्रकार हितो की भी चर्चा करता है
(1) उपराष्ट्रीय हित → शासक वर्ग अपने स्वार्थ के हितो की पूर्ति के लिए अं'रा' में भाग लेता है।

(2) अन्य राष्ट्रीय हित - इसमे दूसरे राष्ट्रो में हस्तक्षेप किया जाता है

(3) अन्यराष्ट्रीयहित - इसमें युद्ध का प्रयोग किया जाता है।

(B) मारगेन्थाउ
नियम (4) विवेक राजनीति का उच्चतम मूल्य है :—
मारगेन्थाउ के अनुसार यथार्थवादी सिद्धान्त नैतिकता की उपेक्षा नहीं करता है। परन्तु किसी राष्ट्र की राष्ट्रीय हित की प्राप्ति नैतिकता में निहित होती है।

(5.) राष्ट्रीय नैतिक नियम व सार्वभौमिक नैतिक नियम अलग-2 होते हैं — राष्ट्रीय नैतिकता का तात्पर्य है — राष्ट्रीय हितों व शक्ति की प्राप्ति नैतिकता में निहित है।
सार्वभौमिक नैतिकता — त्याग, बलिदान से होता है।

NOTE 5 वाँ नियम चौथे (4) नियम पर ही आधारित है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की स्वायत्तता
→ इसके अन्तर्गत मारगेन्थाउ कहता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को राजनीतिक विज्ञान से अलग कर एक स्वतंत्र विषय बनाना चाहिए।

* यथार्थवाद का विश्लेषण —
(a) तीन मूल नियम :—

① किसी भी राष्ट्र का राष्ट्रीय हित उसके भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक विस्तार से निहित है।
② अं.रा. में राष्ट्र के नेता राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए भाग लेते हैं।
③ राष्ट्र के नेता अं.रा. में भाग लेते हैं तब शक्ति संबंधों को ध्यान में रखते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

(B) मारगेन्थाऊ 3 प्रकार की विदेश नीति की चर्चा करता है।

(1) यथा स्थितिवादी →
राष्ट्र अपने वर्तमान प्रभुत्व को बनाये रखना चाहता है जैसे - अमेरिका एक ध्रुवीय विश्व में अपने प्रभुत्व को बनाये।

(2) साम्राज्यवादी →
इसमें युद्ध का सहारा लिया जाता है
जैसे चीन इस प्रकार की विदेश नीति अपनाता है।

(3) प्रदर्शनवादी → इसमें हथियारों का प्रदर्शन किया जाता है।
जैसे उत्तरी कोरिया।

(C) मारगेन्थाऊ निम्न "3 शान्ति के प्रयासों की चर्चा करता है।

(1) नियंत्रण द्वारा → इसमें वह निःशस्त्रीकरण, शक्ति संतुलन सामूहिक प्रजा जैसे प्रयासो का शामिल करता है।

(2) रूपान्तरण द्वारा → इसमें वह विश्व सरकार की स्थापना को सम्मिलित करते हैं।

(3) राजनय / कूटनीति द्वारा → "वार्ता की चालकी पूर्ण चालों" को राजनय कहते - मारगेन्थाऊ इस शक्ति सन्तुलन स्थापना का सबसे व्यवहारिक साधन मानता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

मारगेन्थाऊ राजनय के निम्न 9 नियम बताता है
(1) राजनीति को धर्म से अलग रखना।
(2) विदेश नीति राष्ट्रीय हित पर आधारित
(3) आस्तर हितो में समझौता कर लेना चाहिए।
(4) स्थिर ,, ,, नहीं करना ,,।
(5) प्रत्येक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्रो के हितो को ध्यान से रखना चाहिए।
(6) किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व पूर्णतः नष्ट नही होना चाहिए।
(7) किसी कमजोर राष्ट्र को स्वतंत्र विदेश नीति नही अपनानी चाहिए।
(8) सरकार को सेवक की भांति नही बल्कि नेता की भांति कार्य करना चाहिए।
(9) सेना को राजनीति के अधीन होना चाहिए।

* मार्गेन्थाऊ के यथार्थवाद की आलोचना –
1. यह मानव प्रकृति में सहयोग की अवहेलना करता है।
2. अं रा में सहयोग पक्ष ,, ,, है।
3. यह अत्याधिक शक्ति पर बल देता है।
4. स्टनले हाफमेन इसे "पॉवर मोनोइज्म (एकल शक्तिवादी दृष्टिकोण) की संज्ञा देता है।
5. इसके विचारो में विरोधाभास पाया जाता है। एक और तो वह अं रा को शक्ति के लिए संघर्ष बताता है वही इसकी और 3 शान्ति के प्रयासो की चर्चा करता है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

NOTE

(1) स्टनले हाफमैन "समन्वयवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है" जिसमे वह 'आदर्शवाद व यथार्थवाद दोनो को सम्मिलित करता है'।

(2) प्रकट राजनय → उद्देश्य स्पष्ट होते है।
अप्रकट " → " " नही "

(3) गनबोट्स डिप्लोमेसी →
अमेरिका ने गनबोट्स डिप्लोमेसी का प्रयोग करते हुए 1971 मे भारत को डराने के लिए अपना 7 वां बेड़ा "बंगाल की खाड़ी" मे भेजा।

(4) पिंगपोंग डिप्लोमेसी —
इसके अन्तर्गत चीन ने अपने पिंगपोंग खिलाड़ी जुआंग जदोंग को खेलने के लिए 1971 मे अमेरिका भेजा ताकि चीन-अमेरिका सम्बधो मे सुधार हो सके।

(3) नव यथार्थवादी सिद्धान्त | संरचनात्मक यथार्थवाद

→ नव यथार्थवाद मार्गेन्थाऊ की कमियों को दूर करने के लिए आता था। इसका उद्भव 1980 में हुआ था।
→ यह अंरा में संघर्ष के साथ सहयोग पर बल देता है।
→ इसकी पहली शाखा संरचनात्मक थी इसलिए इसे संरचनात्मक यथार्थवाद भी कहा जाता है।

इसकी प्रमुख शाखाए है :-

(1.) संरचनात्मक यथार्थवाद →

कैनेथ वाल्टज अपनी पुस्तक " Theory of International politics में (1979) में प्रस्तुत करते है। और इसकी निम्न विशेषताए बताता है।

(1) अंरा में संघर्ष और सहयोग दोनो पाये जाते है।

(2) अंरा एक व्यवस्था तो है लेकिन राजनीति व्यवस्था नही है, अर्थात अन्तराष्ट्रीय स्तर पर कोई सत्ता का केन्द्र नही पाया जाता है। अतः अन्तराष्ट्रीय राजनीति अराजकता वाली होती है।

(3) अंरा में महाशक्तियों की संख्या व उनकी भूमिका का विशेष महत्व होता है। जिसे केनेट वाल्टज " Structure of International System " का नाम देता है।

(4) केनेट वाल्टज के अनुसार अंरा में राष्ट्रो को लघु हितों के स्थान पर दीर्घ अवधि हितों पर बल देना चाहिए।

(5) किसी भी राष्ट्र को संभावित क्षमता के स्थान पर, वर्तमान क्षमता के आधार पर निर्णय लेना चाहिए। यदि वह संभावित क्षमता के आधार पर निर्णय लेता है तो सबसे बदत्तर स्थित में पहुँच जायेगा।